5) दुर्ग :- कौटिल्य के अनुसार दुर्ग भी राज्य का उतना ही महत्वपूर्ण अंग है, जितनी जनता, भूमि अथवा राजा। दुर्ग राज्य की रक्षात्मक शक्ति और आक्रमक शक्ति दोनों का प्रतीक है। दुर्ग मजबूत और ऐसा होने चाहिए जिनमें सेना के लिए अच्छी मोर्चेबंदी हो और पानी, भोज्य सामग्री तथा बारूद का अच्छा प्रबंध हो। दुर्ग चार प्रकार के हैं :- औदिक (जो निर्जन मरु प्रदेश में बना हो) वन दुर्ग (जो वनों के बीच में हो) पर्वत दुर्ग तथा धान्वन दुर्ग।

6) कोष :- कौटिल्य कोष को बहुत महत्व देता है। कौटिल्य के अनुसार राज्य के पास भरा पूरा कोष और आय के स्थायी स्रोत होने चाहिए। इस संबंध में उसका विचार है कि राजा प्रजा से उपज का छठा भाग ले, तथा कोष में बहुमूल्य मुद्राएँ तथा धातुएँ पर्याप्त मात्रा में रखे। कोष धर्मपूर्वक एकत्रित किया जाना होना चाहिए और वह मात्रा में इतना अधिक हो कि ~~उसके~~ विपत्ति काल में भी दीर्घकाल तक निर्वाह हो सके।

6) दंड अथवा सेना

राज्य की सुरक्षा के लिए सेना का विशेष महत्व है। कौटिल्य के अनुसार जिस राजा के पास सैन्य बल होता है, उसके मित्र तो मित्र बने ही रहते हैं लेकिन इसके साथ शत्रु भी मित्र बन जाते हैं। सैनिक अस्त्र-शस्त्र के प्रयोग में भी भली-भाँति प्रशिक्षित वीर, स्वाभिमानी और राष्ट्र प्रेमी होना चाहिए। वह क्षत्रिय वर्ग में ~~सेना~~ सेन सेना की नियुक्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानता है। किन्तु उसका विचार है कि आवश्यकता पड़ने पर वैश्य तथा शूद्र को भी सेना में नियुक्त किये जा सके हैं। कौटिल्य के अनुसार संतुष्ट सेना विजय की कुंजी है अतः सैनिकों को अच्छा वेतन एवं अन्य सुविधाएँ प्रदान करते द्वारा संतुष्ट तथा प्रसन्न रखा जाना चाहिए।

7) मित्र :—

कौटिल्य के अनुसार मित्र भी राज्य का एक आवश्यक अंग है। उसके अनुसार मित्र आनुवंशिक होना चाहिए न की कृत्रिम। वह ऐसा हो कि जब भी सहायता की आवश्यकता पड़े सहायता के लिए आए तथा जिससे संबंध विच्छेद की संभावना न हो। राज्य के इन सात अंगों के विवेचन के साथ ही कौटिल्य ने इसके सापेक्षिक महत्व पर विचार किया है। इन सात अंगों के संबंध में मनु, भीष्म और शुक्र जैसे पुराने आचार्यों का मत तो यह था कि स्वामी, आमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड और मित्र सब महत्वपूर्ण है।

किन्तु आचार्य भारद्वाज ने इस बात का खंडन करते हुए कहा है कि स्वामि के अपेक्षा आमात्य (मंत्री) अधिक महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि वास्तविक प्रशासन का संचालन तो आमात्य ही करता है। इस बात पर कौटिल्य भारद्वाज के बात से असहमत होकर लिखते है कि आमात्य से राजा अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि राजा आमात्य के व्यसनी होने पर उसके स्थान पर अन्य मंत्रियों की नियुक्त कर सकता है। इसलिए कौटिल्य ने अपने सप्तांग सिद्धान्त में राजा को अधिक महत्व दिया है, और वह राजा को पूरे शासन की आधारशिला मानता है। इस संबंध में उसने आठवें अधिकरण के दूसरे अध्याय में लिखा है "राजा राज्यमिति प्रकृति संक्षेप"

अर्थात संक्षेप में राज्य की केवल दो ही प्रकृति या अंग है — राजा और राज्य।

आधुनिक राजशास्त्री — आधुनिक राजशास्त्री राज्य के चार तत्व मानते है — भू-भाग, जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता। इस दृष्टि से उनके अनुसार राज्यों के अंगों में कोष, सेना (दंड) और मित्र को स्थान दिया जाना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता है। परन्तु साधारण रूप से यह स्वीकार किया जा सकता है कि प्राचीन काल में कोष और दुर्ग राज्य के अस्तित्व एवं सुरक्षा तथा जनता की समृद्धि के लिए आवश्यक तत्व रहे होंगे। यही बात मित्र के संबंध में भी जा सकती है। आज भी कोई छोटे राज्य बड़े

कुंजाजु
गौरव कुंग

Page No.
Date : / /200

किसी शक्तिशाली राज्यों के सहयोग के बिना अपना अस्तित्व सुरक्षित नहीं कर सकता।

निष्कर्ष

कौटिल्य ने अपने सप्तांग सिद्धान्त द्वारा राजशास्त्र और राज्य संस्था को अधिक लौकिक और धर्मनिरपेक्ष रूप प्रदान किया है। स्मृतिकारों तथा वेदों में तो राजा के पुरोहितों को व्यवहारिक राजनीतिक में महत्वपूर्ण स्थान दिया था। किन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र में पुरोहित पद की चर्चा बहुत कम है और राज्य के सात अंगों में उसे स्थान न देकर उसका महत्व कम कर दिया है।